



دفتر مجلس انصار اللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA



सारांश ख़ुतब: जुम: सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद खलीफतुल मसीह अलखामिस अय्यदहुल्लाहु तआला
बिनसिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मदा 02.10.2026 स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.
(अख़ा महिने की तिथि 2,1405 हश)

तवक्कुल (अल्लाह पर भरोसा) के हवाले से हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पाकीज़ा नमूना।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 02.10.2026

محله احمدیہ قادیان پنجاب 143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

اَقْبَاعِدْ عَوْدًا بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ مَا لَيْكَ يَوْمَ الدِّينِ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ
الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ

तशहहुद, तअव्वुज़ और सूर: फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर, अय्यदहुल्लाहु तआला, ने फ़रमाया: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अपनी इब्तिदाई ज़िंदगी से ही अल्लाह तआला के फ़ज़ल, उसका आप अलै. से सुलूक और आप अलै.का अल्लाह तआला पे तवक्कुल जो था उसका ज़िक्र करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़र्माते हैं कि तीस बरस क़ब्ल मेरे वालिद साहब अपनी आखिरी उम्र में बीमार हुए जिसमें उन की वफ़ात मुक़द्दर थी। उस रोज़ दोपहर में इल्हाम हुआ कि الطَّارِقُ وَالسَّمَاءُ जिस के मआनी हैं क़सम है आसमान की और इस हादसे की जो आफ़ताब के गुरुब (सूरज का ढलना या अस्त होना) के वक़्त पड़ेगा। और साथ ही दिल में डाला गया कि यह उनकी वफ़ात की तरफ़ इशारा है। यह असल में अल्लाह तआला की तरफ़ से अज़ा पुरसी (किसी के निधन पर दुख प्रकट करना या ढांढस बंधाना) थी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़र्माते हैं कि जब मुझे ख़बर दी गई तो मुझे कुछ दुख पहुँचा। उन को ज़िंदगी में गवर्नमेंट की तरफ़ से कुछ हुक्क़ (विशेषाधिकार) हासिल थे जिसकी वजह से दिल में यह ख़ौफ़ पैदा हुआ कि अब तंगी के दिन हम पर आएँगे। तब उसी वक़्त ग़नूदगी (ऊँघ) में यह इल्हाम हुआ कि اَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ यानी क्या खुदा अपने बंदे के लिए काफ़ी नहीं। इस इल्हाम-ए-इलाही के साथ दिल मज़बूत हो गया जैसे कोई सख़्त दर्दनाक ज़ख़म मरहम से अच्छा हो जाता है। यह अमल बारहा आज़माया गया है कि वही-ए-इलाही में दिली तसल्ली देने के लिए एक ख़ासियत है यानी आप अलै.को यक़ीन था कि अल्लाह काफ़ी है और किसी चीज़ की फ़िक्र करने की ज़रूरत नहीं।

आप अलै. ने फ़र्माया कि जब मुझे यह इल्हाम हुआ तो मैंने उसी वक़्त यह समझ लिया कि खुदा मुझे ज़ाए नहीं करेगा। तब मैंने एक हिंदू खत्री मलावामल साकिन क़ादियान को यह इल्हाम लिख कर दिया और यह सारा क़िस्सा उसे सुनाया और फ़ौरी अमृतसर भेजा ताकि मोहम्मद शरीफ़ साहब कलानूरी की मअरफ़त किसी नगीने में खुदवा कर मुहर बनवा कर ले आए। और मैंने इस हिंदू को तैयार किया ताकि वह गवाह हो और मौलवी मोहम्मद शरीफ़ भी गवाह हो जाएँ। चुनाँचे मौलवी साहब की मअरफ़त से यह अंगूठी मुबलिग पाँच रुपये में तैयार हो कर मेरे पास पहुँच गई। और अब तक मेरे पास मौजूद है। हुज़ूर-ए-अनवर ऐयदहुल्लाहु तआला ने फ़र्माया कि और अल्लाह के फ़ज़ल से अब तक चलती आ रही है।

हुज़ूर ने फ़र्माया कि आप अलै.के अल्लाह पर तवक्कुल और सच्चाई पर क़ाइम रहने के ग़ैर भी मुअतरिफ़ (मानने वाला) थे। मलिक ख़ालीकुद्दीन साहब बयान करते हैं कि एक शख्स ने एक मजलिस में हज़रत साहब अलैहिस्सलाम की मुखालफ़त शुरू की तो मौलवी फ़ज़ल दीन साहब जो एक ग़ैर अहमदी वकील थे और मुक़द्दमा इक़दाम-ए-क़त्ल में हुज़ूर अलैहिस्सलाम के वकील थे। उन्होंने निहायत जोश में आ कर कहा कि मैं मिर्ज़ा साहब की अज़ीम शख्सियत और अख़लाक़ का क़ाइल हूँ। मैंने बड़े बड़े नेक लोगों को देखा है कि क़ानूनी मशवरों पर उन्होंने अपना बयान तब्दील कर लिया लेकिन आप अलै.को ऐसा पाया कि जिन्होंने सच के मक़ाम से क़दम नहीं उठाया। मैंने मार्टिन क्लार्क के मुक़द्दमे में एक क़ानूनी बयान तजवीज़ किया और मैंने कहा कि मुलज़िम का बयान हलफ़ी नहीं होता। मिर्ज़ा साहब ने बयान पढ़ कर कहा कि इस में तो झूठ है। खुदा तआला ने तो इजाज़त नहीं दी कि मुलज़िम झूठ बोले। मैंने कहा कि आप क्यों जान बूझ कर अपने आप को मुसीबत में डालते हैं लेकिन हज़रत मसीह मोऊद अलैहिस्सलाम ने फ़र्माया: मैं यह क़ानूनी बयान दे कर नाजाएज़ फ़ायदा उठाने के लिए अपने खुदा को नाराज़ कर दूँ, यह मुमकिन नहीं ख़्वाह कुछ हो जाए। वह कहते हैं कि आप अलै.ने फ़र्माया कि मैंने कभी वहम भी नहीं किया कि आप की वकालत से फ़ायदा होगा। मेरा भरोसा तो खुदा पर है जो मेरे दिल को देखता है और मैं उस पर तवक्कुल करता हूँ। आप अलै.ने फ़र्माया कि मेरा बयान आप के इस क़ानूनी बयान से ज़्यादा मुअस्सिर होगा। ख़्वाह सज़ा हो जाए लेकिन मैं खुश हूँगा कि मैंने खुदा की नाफ़रमानी नहीं की और अजीब बात है कि आप अलै.बरी भी हो गए। फ़र्माया कि वकालत तो एक दुनियावी चीज़ है लेकिन तवक्कुल अल्लाह तआला पर करना चाहिए। यह ग़ैर भी इससे मुतास्सिर हुए बग़ैर न रह सका।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़र्माया कि हज़रत मुफ़्ती मोहम्मद सादिक़ साहब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान फ़र्माते हैं कि हज़रत मसीह मोऊद अलैहिस्सलाम ने वस्सलाम ने फ़र्माया कि आजकल के लोगों के नज़दीक तहज़ीब यह है कि दुनिया का कीड़ा बन जाएँ और खुदा को भूल जाएँ और ज़ाहिरी असबाब की परस्तश में लग जाएँ मगर खुदा तआला के नज़दीक तहज़ीब यह है कि अल्लाह तआला पर पूरा भरोसा हासिल हो जाए और दिल को सच्ची पाकीज़गी हासिल हो जाए।

एक मजलिस में कुछ बीमारियों का ज़िक्र था। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़र्माया: मेरा मज़हब बीमारियों में दुआ के ज़रीए से शिफ़ा के मुतअल्लिक़ जितना मेरे दिल में होता है, मैं ज़ाहिर नहीं कर सकता। तबीब (चिकित्सक) एक हद तक ठहर जाता है और मायूस हो जाता है। अक्सर लोग

खत लिखते हैं कि डॉक्टर ने जवाब दे दिया है। लेकिन इसके आगे खुदा दुआ के ज़रीए से राह खोल देता है कि जो हदें लोगों ने मुकर्रर की हुई हैं उससे आगे बढ़ कर उम्मीद पैदा हो और इसी तरह अल्लाह तआला की शनाख्त (मअरफ़त) शुरू होती है। आप अलै.फ़र्माते हैं कि: हमारा मज़हब तो यह है कि अगर तमाम तबीब दुनिया के मायूस हो जाएँ और मौत का फ़तवा लगाएँ तब भी काफ़ी तवज्जो होने पर दुआ क़बूल हो कर शिफ़ा हो जाती है।

हुज़ूर-ए-अनवर ऐयदहुल्लाहु ने फ़र्माया कि हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहब सियालकोटी रज़ियल्लाहु अन्हु की बीमारि के हवाले से शैख़ याक़ूब अली इरफ़ानी साहब रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत मसीह मोऊद अलैहिस्सलाम की मुतवक्किलाना शान बयान करते हैं

मौलवी साहब रज़ियल्लाहु अन्हु की बीमारी में हज़रत साहब अलैहिस्सलाम ने अपनी कमाल मुहब्बत और ईसार का और अल्लाह तआला पर कामिल तवक्कुल और भरोसे का नमूना दिखाया जो एक अहले बसीरत के लिए काफ़ी सबूत है हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम के मिन जानिब अल्लाह होने का, और खुदा तआला के साथ उनका सच्चा ताल्लुक़ होने का, और इस बात का कि कोई रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नमूना आज उम्मत में देखना चाहे तो हज़रत मसीह मोऊद अलैहिस्सलाम के अलावा आज दुनिया में कोई नहीं।

हज़रत मसीह मोऊद अलैहिस्सलाम आख़िरी वक़्त तक दुआ करते रहे लेकिन जब वक़्त आ गया तो फिर अल्लाह की रज़ा पर राज़ी हो गए।

आप अलै. फ़र्माते हैं कि तवक्कुल यही है कि जो असबाब अल्लाह तआला ने मुकर्रर किए हैं उनको हत्तल मक़दूर (जहाँ तक संभव हो) जमा करो और फिर खुद दुआ में लग जाओ कि खुदा इस का अंजाम बख़ैर करे। सदहा आफ़ात हैं जो इन असबाब को भी तह ओ बाला कर सकती हैं, उन को मिटा कर हमें मंज़िल-ए-मक़सूद पर पहुँचा।

हुज़ूर-ए-अनवर ऐयदहुल्लाहु तआला ने फ़र्माया कि हज़रत सैयद ज़ैनुल आबिदीन शाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि जूँही इलाक़े में ताऊन (प्लेग, एक संक्रामक बीमारी) नमूदार होती आप अलै.अपने घर की सफ़ाई का हुक्म देते, बोर्डिंग हाउस की सफ़ाई करवाते और तमाम अहबाब को हुक्म देते कि अपने घरों में फ़िनाइल का इस्तेमाल करें और धूनी दें। आप अलै.ने फ़र्माया कि असबाब से काम लेना भी अल्लाह तआला की नेअमत का शुक्रिया अदा करना है और तर्क-ए-असबाब शरीअत-ए-इलाहिया के खिलाफ़ है। तवक्कुल का मक़ाम इस के बाद है। सच्ची मअरफ़त यह है कि असबाब के पीछे खुदा तआला के हाथ को देखा जाए।

हुज़ूर फ़र्माते हैं, खुदा के मुकर्रब (नज़दीकी, प्रिय) बंदों के तवक्कुल की भी एक अजीब शान होती है एक तरफ़ वे असबाब को इस तरह बरूए कार लाते हैं कि एक दुनियादार यह समझने लग जाता है कि शायद उन का सारा भरोसा असबाब पर ही होता है लेकिन कभी वे असबाब (साधन) को इस तरह तर्क करते हैं कि जैसे उन की ज़रूरत ही नहीं। तवक्कुल की यह शान भी हज़रत अक़दस मसीह मोऊद अलैहिस्सलाम की सीरत में हमें नज़र आती है। हुज़ूर-ए-अनवर ऐयदहुल्लाहु तआला ने फ़र्माया कि हज़रत मुस्लेह मोऊद रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हज़रत मसीह मोऊद अलैहिस्सलाम की वफ़ात से दो तीन साल क़ब्ल जब हज़रत मसीह मोऊद अलैहिस्सलाम को शदीद ख़ाँसी हुई। उस वक़्त मेरी उम्र 17 साल थी और आप अलै.को

दवाई देना मेरे सुपुर्द था। हज़रत खलीफ़तुल मसीह अल-अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु के नुस्खे भी इस्तेमाल होते थे और दूसरे भी लेकिन ख़ाँसी बढ़ती जाती थी। यह 1907 ई० का वाक़िआ है। अब्दुल हकीम मुर्तद ने आप अलै. की ख़ाँसी की तक़लीफ़ का पढ़ कर लिखा था कि आप अलै. नऊज़ुबिल्लाह सिल की बीमारी में मुब्तला हो कर फ़ौत होंगे। इसलिए मैं बहुत एहतियात करता था कि कहीं उन को खुशी का ग़लत मौक़ा न मिल जाए। कभी-कभी ख़ाँसी का इतना लंबा दौरा पड़ता था कि मालूम होता था कि साँस रुक जाएगा। इसी हालत में बाहर से एक दोस्त आए और तोहफ़े के तौर पर फल लाए तो मैंने वह आप अलै. के सामने पेश कर दिया कि यह लाए हैं। आप अलै. ने यह देखा तो फ़र्माया कि इन को जज़ाकल्लाह कह दो। और उनमें से केला उठाया। और शायद मुझे सबक़ देने के लिए फ़र्माया कि यह ख़ाँसी में कैसा होता है? मैंने कहा कि यह अच्छा नहीं होता तो आप अलै. मुस्कुरा पड़े और छील कर खाना शुरू कर दिया। मैंने कहा ख़ाँसी बहुत सख़्त है और यह ख़ाँसी में अच्छा नहीं है। आप अलै. मुस्कुरा कर इस को छील कर खाते रहे और मैंने नादानी में इस पर फिर इस़ार (आग्रह) किया। फ़र्माया कि मुझे अभी इल्हाम हुआ है: ख़ाँसी दूर हो गई। हालांकि न कोई दवा इस्तेमाल की मगर ख़ाँसी दूर हो गई। यह सिर्फ़ इलाही तसरूफ़ से हुआ।

चुनाँचे ख़ाँसी उसी वक़्त से जाती रही हालांकि उस वक़्त न कोई दवा इस्तेमाल की और न परहेज़ किया बल्कि बदपरहेज़ी की और ख़ाँसी भी दूर हो गई। हालांकि इससे पहले एक महीना इलाज होता रहा था और ख़ाँसी दूर न होती थी तो यह इलाही तसरूफ़ (ईश्वर का नियंत्रण या हस्तक्षेप) है यूँ तो बदपरहेज़ी से बीमारियाँ भी होती हैं और इलाज से सेहत भी होती है मगर अल्लाह तआला चाहता है, दख़ल भी दे देता है और दुआ का हथियार इसी लिए अल्लाह तआला ने इंसान को सिखाया है कि वह खुदा तआला के हुज़ूर जा कर कहे कि मैं आज़ादी नहीं चाहता मैं अपने हालात से तंग आ गया हूँ आप मेहरबानी करके मेरे मुआमलात में दख़ल दें और अल्लाह तआला भी देखता है कि बंदा मुतवक्किल हो गया है और चाहता है कि मैं इसके मुआमलात में दख़ल दूँ तो वह देता है। जब अल्लाह तआला पर पूरा तवक्कुल किया जाता है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़र्माया कि इस हवाले से मज़ीद इंशाअल्लाह आइंदा बयान करूँगा।

खुल्बा-ए-जुमा के आख़िर में हुज़ूर-ए-अनवर ने करम अता उर रहमान साहब मगरिबी बंगाल इंडिया का जो गुज़श्ता दिनों 76 साल की उम्र में फ़ौत हो गए का ज़िक्र-ए-ख़ैर फ़र्माया। मरहूम मूसी थे। पसमांदगान (जीवित बचे संबंधी) में अहलिया के अलावा एक बेटी और तीन बेटे शामिल हैं। एक बेटे मफ़ीजुर रहमान साहब मुरब्बी-ए-सिलसिला बोस्निया हैं। एक बेटे शाह नूर साहब मुअल्लिम हैं इंडिया में और एक दामाद साबिर अली साहब मुरब्बी-ए-सिलसिला हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने दूसरा ज़िक्र मरहूमा खदीजा सिद्दीका कुंतो साहिबा इंडोनेशिया का फ़र्माया इसके बाद हर दो मरहूमिन की नमाज़-ए-जनाज़ा गायब पढ़ाने का ऐलान फ़र्माया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ مُحَمَّدٌ لَّهِ وَنَسْتَعِيْنُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِيْهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ وَمَنْ يُضِلِّهِ فَلَا هَادِيَ لَهُ وَاَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَيَنْهَىٰ ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يُسْتَجِبْ لَكُمْ وَلِئِنَّ اللّٰهَ لَكَبِيْرٌ

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब - 18001032131